<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

गोरखपुर, 15 सितम्बर! ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज 50वींपुण्यतिथि एवं महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज जी की पांचवी पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत श्री गोरक्षनाथ मन्दिर में चल रहे 'श्रीमद्भागवतकथा ज्ञान यज्ञ ' में आज पाचवें दिन व्यासपीठ से कथाव्यास अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी राघवाचार्य जी महाराज ने भगवान श्रीकृष्ण की बाल-लीला, माखन चोरी, यमलार्जुन उद्धार, गोपियों का वस्त्र हरण द्वार शिक्षा, कालिया नाग का मर्दन, गोवर्धन पूजा और इन्द्र का मान मर्दन कथा का रसपान कराया।

कथाव्यास ने कहा कि भगवान की असीम कृपा से फलस्वरूप जीव को सत्संग का लाभ मिलता है। जब अनन्त पूर्ण फल एकत्रित होतें हैं। तब प्रभु कृपा से सतसंग करने का अवसर मिलता है। जो व्यक्ति संतो की सेवा में लगा रहता है। उसे सहज ही भक्ति मिल जाती है। कथा का रसपान करने से हम भगवान के स्वभाव और प्रभाव के बारे में जानते हैं और जो भगवान के स्वभाव को जान जाता है। वह परमात्मा से प्रित करने लगता है। जब भगवान के प्रति प्रीत बढ़ती हैं तो जीव का सहज ही कल्याण हो जाता है। यदि कथा नहीं सुनते हैं तो भगवान सामने भी हो तो भी नहीं पहचान पाते और रावण, कुंभकरण, शिशुपाल की तरह भगवान का विरोध कर बैठते हैं।

भगवान के अवतार के विविध कारणों की व्याख्या करते हुये कथाव्यास ने कहा कि हमारे भगवान वात्सल्य के भूखे हैं। इसी वात्सल्य की प्राप्ति हेतु अजन्मा जन्म धारण करता है, निराकार साकार होता है, अगोचर गोचर होता है। अन्यध बैकुण्ठ के क्षीर सागर में क्या कमी हैं? उन्होनंे कहा कि भगवान बैकुण्ठ में वास करते हैं अर्थात वह हृदय जो कुण्ठा रहित हो। कथाव्यास ने विभिन्न संदर्भो एवं प्रसंगो के माध्यम से कहा कि माता-पिता और गुरुजनों की सेवा करने वाले के घर स्वंय तीर्थ आ कर दर्शन करते है उन्हें तीर्थ करने की जरूरत नहीं है। भोजन बनाते समय माताए यदि भजन करें तो उत्पन्न संतान भी भजन ही करेगी। संसारी सम्बन्ध निभाए या न निभाए किन्तु भगवान से जुड़ा सम्बन्ध अटूट

बन्धन होता है। वस्तुतः श्रीकृष्ण आनंदावतार है। सनातन धर्म का मूल है वेद, ब्राह्मण और संसार। पितृ पूजा से कुल के संस्कार आते है। जो सबको सम्मान दें और स्वंय सम्मान की कामना न करें वह भगवान को प्राणों से भी प्यारा है। जगत का चिन्तन छोड़कर जगदीश का चिन्तन करों जीवन धन्य हो जायेगा। जीवन में चैतन्य की सेवा करना सीखों अन्यथा पत्थरों की मूर्तियों में कुछ नही मिलेगा। भगवान की सेवा में आने वाले सभी पदार्थ चिन्मय है।

कथाव्यास ने कहा भगवान जेल में देवकी की कोख में जन्म लेते हैं। बासुदेव भगवान को टोकरी में रखकर अपने सिर पर लेकर आगे बढ़तें है। जब भी भगवान अथवा उनका आशीर्वाद सर पर होगा तो सभी बन्धन अपनेआप खुल जाते है। जो भगवान दुनिया की रक्षा करता हो, मानवता का रक्षक हो, प्राणियों का तारणहार हो उसकी रक्षा में बसुदेव लगे है। जेल के बाहर आकाश में देवी-देवता दर्शन हेतु लालायित है। भगवान के इस शिशु रूप का दर्शन त्रेता युग में नही हो सका था। भगवान दशरथ के महल में पैदा हुये और महल में ही पले। पहली बार इस रूप में भगवान का दर्शन कर देवता धन्य होना चाह रहे थे। बसुदेव जैसे ही जेल के बाहर निकले इन्द्रदेव ने हल्की फुहारों से भगवान का स्वागत किया। शेषनाथ उनकी छाया बन चल पड़े। भगवान के चरण स्पर्श को उतावली यमुना अपने उफान पर थी। यमुनातीर पर भगवान के पहुँचने की कथा के साथ हारमुनियम, बाँसुरी और तबले का समवेत स्वर गूँजने लगता है और श्रद्धालुओं की ताली की ताल साथ देने लगती हैं संगीत का स्वर फूटपड़ता है। यमुना भगवान कृष्ण के स्पर्श से ही श्यामल है।

बासुदेव भगवान को लेकर नन्द के घर में पहुँचते है। वहाँ भी भगत्कृपा से सभी सो गये थे। बसुदेव माता यशोदा के पास तक पहुँचते है। वहाँ माता यशोदा की गोद में महामाया भगवती अवतरित हो चुकी थी। बसुदेव भगवान को माता यशोदा की गोद में रखकर भगवती को लेकर वापस मथुरा के लिए चल पड़ते है। भगवती को लेकर जब वे कारागार में पहुँचे तो दरवाजे बन्द होते गये। कंस को सूचनां मिलती है, वह दौड़ा-भागा आता है और जैसे ही भगवती का पैर पकड़कर

पटकना चाहा भगवती अट्हास करती हुई आकाश मार्ग की ओर चल दीं और आकाशवाणी की 'अरे कंस तेरा काल पैदा हो चुका है।'

श्रीकृष्ण जन्म के बाद श्रीमद्भागवत कथा में निशाचर प्रवृत्ति की प्रतीक पूतना प्रवेश करती है। कथाव्यास ने कथा को वर्तमान सामाजिक बुराईयों की ओर मोड़ देते है और बताते है कि शिशु की हत्या करने वाली पुतना एक प्रतीक है। वह कृष्ण को दूध पिलानें का उपक्रम करती हैं जो उपर से सेवा का नाटक करती है। भगवान ने पूतना का बध कर दिया। आज ऐसे ही समाज में फैली इन पूतनाआंे का तिरष्कार करें, वे मृतक समान हो जायेगीं।

भगवान श्रीकृष्ण मथुरा में अवतरित होते हैं और वृन्दावन में लीला करके सारे गोप-गोपियों को आनन्द प्रदान करते हैं। वृन्दावन में भगवान लीला पुरूषोत्तम लीला करते हैं तथा यमलार्जुन का उद्धार करते हैं। भगवान तो माखन चोर हैं वे माखन ही नहीं चित भी चुरा लेते हैं। एक बार गोपियां निर्वस्त्र यमुना में स्नान करती हैं। श्रीकृष्ण उनके वस्त्र को चुरा लेते हैं। इस प्रकार उन्हे शिक्षा देते हैं कि जल में निर्वस्त्र होकर स्नान नहीं करना चाहिए। जब कालिया नाग का आतंक व्याप्त हो गया। यमुना का जल जहरीला हो गया तो गेंद ढूंढ़ने के बहाने यमुना में प्रवेश करते हैं और कालिया नाग को नाथते हैं तथा उसके फन पर नृत्य करते हैं। इन्द्र को अपने उपर घमण्ड था। बृजवासी इन्द्र की पूजा करते थे। श्रीकृष्ण ने कहा कि ये गोवर्धन पर्वत हमें सब कुछ देते हैं हमें इनकी पूजा करनी चाहिए। जब बृजवासी इन्द्र की पूजा नहीं करते हैं तो इन्द्र प्रलयकारी वर्षा करते हैं। श्रीकृष्ण गांव वालो के साथ जाते हैं और गोवर्धन पर्वत को उठा लेते हैं। श्रीकृष्ण एक उंगली को पर्वत को उठा लेते है सब कुछ श्रीकृष्ण के कारण ही होता है फिर भी सामुहिकता को बोध हो इसलिए श्रीकृष्ण सारे ग्वाल बालो को कहते है कि वह पर्वत को उठाने मे सहयोग करें। यह है वास्तविक नेतृत्व क्षमता। भगवान श्रीकृष्ण सबके मान की रक्षा करते है। गोवर्धन उठाने का श्रेय अपने ना लेकर सभी को देते हैं। इस प्रकार इन्द्र का मान मर्दन होता है और इन्द्र श्रीकृष्ण से क्षमा मांगते हैं।

कथावाचक भगवान कृष्ण-राधा प्रसंग को आगे बढ़ाते हुए बताते है कि भगवान कृष्ण माँ यशोदा से राधा से शादी करने के लिए मनाते है और कहते है ‘‘राधिका गोरी से बृज की छोरी से, मैया करा दो मेरो ब्याह’ ’ और पूरा हाल भक्ति के सागर में डूब पड़ता है और कथा विश्राम पाती है।

मुख्य यजमान श्री अजय सिंह, श्री रेवतीरमणदास, श्री संतोष अग्रवाल ‘शशि’ , महेश पोद्दार, विकास जालान, श्री चन्द बंसल, अवधेश सिंह, जवाहरलाल कसौधन, सीताराम जायसवाल आदि थे। इस अवसर पर महन्त रविन्द्रदास जी महाराज, महन्त सुरेशदास जी, प्रधान पुजारी कमलनाथ जी, श्री योगी धर्मेन्द्रनाथ जी, श्री दुर्गेश बजाज, दयानन्द शर्मा आदि उपस्थित थे। मंच संचालन डॉ. श्री भगवान सिंह ने किया।

दिनांक 16.09.2019 साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह में संगोष्ठी

साप्ताहिक श्रद्धाजलि समारोह के अन्तर्गत पूर्वाह्न 10.30 बजे से ‘जल है तो कल है’ विषय पर संगोष्ठी दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार में सम्पन्न होगी। संगोष्ठी की अध्यक्षता पूर्व कुलपति एवं महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो0 यू0पी0सिंह जी करेंगे। मुख्य अतिथि नैमिषारण्य से पधारे स्वामी विद्या चैतन्य जी, मुख्य वक्ता भारत सरकार के केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री मा0 गजेन्द्र सिंह शेखावत जी तथा विशिष्ट अतिथि उत्तर प्रदेश सरकार के जल शक्ति मंत्री डॉ. महेन्द्र सिंह जी होंगे। संगोष्ठी में मदन मोहन मालवीय प्रोद्योगिकी विश्वविद्यालय, गोरखपुर के प्रोफेसर गोविन्द पाण्डेय जी का भी व्याख्यान होगा।